ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी – संभावनाएँ और सीमाएँ

डॉ. ज्योति जांगिड़

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान

सेठ आर. एन. रूईया राजकीय महाविद्यालय, रामगढ़ शेखावाटी (सीकर), राजस्थान

सारांश

भारत की राजनीति में युवाओं की भागीदारी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को अधिक समावेशी और प्रगतिशील बना सकती है। हालाँकि, उनकी भागीदारी में कई सामाजिक, आर्थिक और संस्थागत बाधाएँ हैं। युवा आधुनिक भारतीय समाज की ऊर्जा, उत्साह और नवाचार का प्रतीक हैं। वे देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और राष्ट्रीय नीतियों का नवीनीकरण और संवर्धन में अहम योगदान प्रदान करते हैं। भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी एक व्यापक और महत्वपूर्ण विषय है, जो देश के भविष्य और लोकतांत्रिक प्रणाली की मजबूती को प्रभावित करता है। भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है, जहां लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम उम्र की है। ऐसे में युवाओं की राजनीति में सक्रिय भागीदारी न केवल आवश्यक है, बल्कि यह देश के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए भी अनिवार्य है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं की भूमिका अमूल्य थी। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, और नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं ने यह सिद्ध किया कि युवाओं की ऊर्जा और दृष्टिकोण परिवर्तनकारी हो सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद भी, युवा नेताओं ने राजनीति में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, लेकिन धीरे–धीरे राजनीतिक व्यवस्था में पारिवारिक राजनीति और अनुभव आधारित नेतृत्व का प्रभाव बढ़ गया, जिससे युवाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत कम होती गई। यह शोध पत्र युवाओं की भागीदारी की संभावनाओं और सीमाओं का विश्लेषण करता है और उनके प्रभावी योगदान के लिए समाधान प्रस्तुत करता है। *शोध पत्र युवाओं की भूमिका, उनकी भागीदारी के अवसर, सीमाएँ, और उनके प्रभाव को बढ़ाने के लिए समाधान प्रस्तुत करता है। साथ ही, नवीन आँकड़ों और क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी का विश्लेषण करता है।*

मूल बिन्दु – भारतीय राजनीति, युवा भागीदारी, आधुनिक भारतीय समाज, संस्थागत बाधाएँ

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

परिचय :

भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें हमें युवाओं की राजनीतिक सक्रियता और उनकी भूमिका पर चर्चा करनी चाहिए। भारत में युवाओं की आबादी लगभग 65 प्रतिशत है, जो देश की राजनीतिक दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। युवाओं की राजनीतिक सक्रियता से देश में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। आज का युवा सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से राजनीतिक घटनाओं और नीतियों के प्रति अधिक जागरूक है। वह सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों का विश्लेषण करता है और उनकी आलोचना या समर्थन करता है। चुनावों में युवाओं की भागीदारी पिछले दशक में काफी बढ़ी है। 2019 के आम चुनाव में, लगभग 15 करोड़ नए युवा मतदाता थे, जिन्होंने लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। युवाओं की भागीदारी का एक सकारात्मक पहलू यह है कि वे नई सोच और नवाचार लेकर आते हैं। वर्तमान में कई युवा नेता जैसे राहुल गांधी, तेजस्वी यादव, अक्षय यादव, और चंद्रशेखर आजाद रावण भारतीय राजनीति में सक्रिय हैं। युवाओं ने हाल के वर्षों में नागरिकता संशोधन अधिनियम (CAA), कृषि कानून, और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर अपनी आवाज बुलंद की है। ये आंदोलन यह दर्शाते हैं कि युवा न केवल वोटर हैं, बल्कि सक्रिय नागरिक भी हैं। भारतीय राजनीति में पारिवारिक राजनीति का बोलबाला है, जिससे नए और बाहरी युवाओं के लिए अवसर सीमित हो जाते हैं। युवा नेताओं को अकसर अनुभवहीन मानकर नजरअंदाज किया जाता है। राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार और नैतिकता की कमी भी युवाओं को हतोत्साहित करती है। राजनीतिक शिक्षा और नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाओं को तैयार कर सकते हैं। युवाओं को अपने विचार व्यक्त करने और समर्थन जुटाने के लिए सोशल मीडिया का अधिकतम उपयोग करना चाहिए। राजनीति में पारदर्शिता और भ्रष्टाचार रहित माहौल युवाओं को आकर्षित कर सकता है। युवाओं को राजनीतिक कौशल, जैसे जनसंपर्क, नेतृत्व, और नीति निर्माण, में प्रशिक्षित करना चाहिए।

भारत, जो विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, अपनी युवा जनसंख्या के कारण एक अद्वितीय स्थिति में है। लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु के लोगों की है, जो इसे युवा शक्ति से संपन्न राष्ट्र बनाता है। लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करने में युवाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है। हालांकि, भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी में कई बाधाएँ हैं। भारत में युवाओं का बड़ा हिस्सा राष्ट्रीय नीति, राजनीतिक संरचना, और लोकतांत्रिक विकास में अहम भूमिका निभाता है। देश में युवाओं की संख्या एवं महत्त्व पर दृष्टि डालें तो पता चलता है की 2028 तक भारत की औसत आयु 29 वर्ष रहने का अनुमान है। यह जनसांख्यिकीय लाभ लोकतंत्र को अधिक प्रगतिशील बना सकता है। चुनाव आयोग के अनुसार, 2019 के आम चुनाव में 8 करोड़ से अधिक नए युवा मतदाताओं का पंजीकरण हुआ। 18–29 वर्ष के युवा भारत में इंटरनेट और सोशल मीडिया के मुख्य उपयोगकर्ता हैं। उनकी डिजिटल भागीदारी ने राजनीतिक अभियानों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

युवाओं की राजनीतिक भागीदारी का क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य :

उत्तर प्रदेश और बिहार में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी अधिक है, खासकर स्थानीय पंचायत चुनावों में। उदाहरण के तौर पर देखें तो बिहार के युवा "शक्ति संगठन" ने पंचायत स्तर पर युवाओं की भागीदारी बढ़ाई है। इसी प्रकार से दक्षिणी भारत में तमिलनाडु और केरल में शैक्षणिक जागरूकता के कारण युवा राजनीतिक रूप से अधिक सक्रिय हैं। छात्र संगठनों का प्रभाव, जैसे कि एसएफआई (स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया), राजनीति में युवाओं की भूमिका को बढ़ावा देता है। पूर्वोत्तर भारत में मणिपुर और असम में युवाओं ने विभिन्न सामाजिक आंदोलनों और पर्यावरण संरक्षण अभियानों में भाग लिया है। उदाहरण के तौर पर असम के काजीरंगा आंदोलन में युवाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पश्चिम भारत के परिप्रेक्ष्य में देखें तो राजस्थान और गुजरात में युवा आंदोलनों, जैसे पाटीदार आंदोलन, ने राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला है।

युवाओं की राजनीतिक भागीदारी की संभावनाएँ–

- **राजनीति में नई ऊर्जा और दृष्टिकोण** – युवाओं में जोश और नवीन सोच है। वे पुरानी राजनीतिक विचारधाराओं को चुनौती देकर नई रणनीतियाँ और दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकते हैं। उदाहरण दिल्ली चुनाव में युवाओं की भागीदारी ने आम आदमी पार्टी को बड़ी सफलता दिलाई।
- **डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रभाव** – युवा सोशल मीडिया का उपयोग करके चुनाव अभियानों, जनमत संग्रह, और सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण 2020 में नागरिकता संशोधन अधिनियम के विरोध में युवाओं ने ट्विटर और इंस्टाग्राम पर व्यापक आंदोलन चलाया।
- **लोकतांत्रिक भागीदारी का नया माध्यम** छात्र संगठनों और स्थानीय निकायों में भागीदारी युवाओं को नेतृत्व कौशल विकसित करने का अवसर देती है। उदाहरण कन्हैया कुमार और हार्दिक पटेल जैसे युवा नेताओं ने छात्रों और समाज के अन्य वर्गों को प्रेरित किया।
- **स्थानीय और राष्ट्रीय राजनीति में योगदान** – पंचायत स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक युवाओं की सक्रिय भागीदारी समाज की नीतियों में समावेशी दृष्टिकोण ला सकती है।

सीमाएँ और चुनौतियाँ –

1. **पारंपरिक राजनीति में वरिष्ठ नेताओं का वर्चस्व** – भारतीय राजनीति में पारिवारिक और वंशवादी परंपराएँ युवाओं के लिए अवसरों को सीमित करती हैं। उदाहरण कई प्रमुख दलों में वरिष्ठ नेता निर्णय प्रक्रिया पर हावी रहते हैं। भारतीय राजनीति में वरिष्ठ नेताओं का वर्चस्व एक लंबे समय से चर्चा का विषय रहा है। यह वर्चस्व राजनीतिक अनुभव, निर्णय लेने की क्षमता, और सामाजिक नेटवर्क के आधार पर स्थापित

होता है। हालांकि, इसका युवा राजनीति पर प्रभाव कई सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं में विभाजित है। यह प्रभाव न केवल युवाओं की भागीदारी को आकार देता है, बल्कि लोकतंत्र के भविष्य को भी प्रभावित करता है। वरिष्ठ नेताओं का अत्यधिक प्रभाव अक्सर युवा नेताओं के विचारों और नवाचार को दबा सकता है। युवा नेता अपनी स्वतंत्र सोच और रचनात्मकता को व्यक्त करने में झिझक महसूस कर सकते हैं। वरिष्ठ नेताओं का वर्चस्व अक्सर वंशवाद को बढ़ावा देता है, जिससे बाहरी और प्रतिभाशाली युवाओं के लिए राजनीति में प्रवेश करना मुश्किल हो जाता है। वरिष्ठ नेताओं के लंबे समय तक सत्ता में बने रहने से नए और सक्षम नेताओं के उभरने के अवसर सीमित हो जाते हैं। इसका असर लोकतंत्र की गतिशीलता पर पड़ता है। वरिष्ठ नेताओं का वर्चस्व संसाधनों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को केंद्रीकृत कर देता है। इससे युवाओं के लिए राजनीतिक अवसर सीमित हो जाते हैं। वरिष्ठ नेताओं का वर्चस्व युवा राजनीति को दिशा और स्थिरता प्रदान कर सकता है, लेकिन जब यह नियंत्रण का रूप ले लेता है, तो यह विकास में बाधक बन जाता है। राजनीति में युवा और वरिष्ठ नेताओं के बीच सामंजस्य लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए अनिवार्य है। इससे न केवल युवाओं की भागीदारी को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि भारतीय राजनीति में नवीनता और ऊर्जा भी आएगी।

2. **राजनीतिक शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी** – युवाओं के लिए राजनीति और नेतृत्व पर कोई संरचित कार्यक्रम नहीं है, जिससे उनकी समझ और योगदान सीमित हो जाता है। 2019 के चुनाव में 18–19 वर्ष के केवल 2 प्रतिशत युवाओं ने मताधिकार का उपयोग किया। राजनीति में सफलता केवल नेतृत्व क्षमता या करिश्मा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इसमें विचारधारा, नीति निर्माण, जनता के मुद्दों को समझने, और प्रशासनिक दक्षता की आवश्यकता होती है। राजनीतिक शिक्षा और प्रशिक्षण युवाओं को ये गुण विकसित करने में मदद करते हैं। लेकिन भारत में इस दिशा में पर्याप्त व्यवस्था नहीं है, जिससे युवाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। राजनीतिक शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी युवाओं की राजनीतिक क्षमता को सीमित कर देती है और लोकतंत्र की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इसे सुधारने के लिए शिक्षा प्रणाली और राजनीतिक दलों को मिलकर काम करना होगा। जब युवाओं को सही मार्गदर्शन और प्रशिक्षण मिलेगा, तब वे देश के नेतृत्व में सकारात्मक और स्थायी बदलाव ला सकेंगे। शिक्षित और प्रशिक्षित युवा ही देश के राजनीतिक और सामाजिक विकास के प्रमुख स्तंभ बन सकते हैं।
3. **आर्थिक और सामाजिक बाधाएँ** – राजनीति में प्रवेश के लिए धन और सामाजिक समर्थन की आवश्यकता होती है, जो अधिकांश युवाओं के पास नहीं होता। युवा नेता किसी भी समाज और राष्ट्र के विकास के मुख्य आधार होते हैं। उनकी सोच, ऊर्जा और क्रियाशीलता समाज को नई दिशा प्रदान कर सकती है। हालांकि, आर्थिक और सामाजिक बाधाएं उनके नेतृत्व के विकास और उनकी क्षमताओं को प्रभावित

करती हैं। युवा नेताओं के पास चुनाव प्रचार, संगठन निर्माण, और जनसंपर्क के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन नहीं होते। इससे उनके विचारों को व्यापक स्तर पर पहुंचाने में कठिनाई होती है। कई युवा अपने परिवार या समाज पर आर्थिक रूप से निर्भर होते हैं। यह निर्भरता उनके स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करती है। राजनीति में धनबल का बढ़ता महत्व युवा नेताओं को हतोत्साहित करता है। बड़े व्यवसायों और धनाढ्य व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त करना उनके लिए चुनौतीपूर्ण होता है।

4. **युवाओं का राजनीति से मोहभंग** – भ्रष्टाचार और राजनीति के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण युवाओं को इससे दूर करता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार, 58 प्रतिशत युवा राजनीति को "अनैतिक" मानते हैं।

युवाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के सुझाव :

1. **राजनीतिक शिक्षा** –स्कूल और कॉलेजों में राजनीतिक प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम शुरू किए जाएँ। नागरिक शास्त्र को व्यावहारिक दृष्टिकोण के साथ पढ़ाया जाए। राजनीतिक शिक्षा युवाओं को जागरूक, सक्षम और उत्तरदायी नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह उन्हें राजनीति की मूलभूत समझ, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की जानकारी, और सामाजिक परिवर्तन में अपनी भूमिका को पहचानने का अवसर प्रदान करती है। राजनीतिक शिक्षा के माध्यम से युवाओं को संविधान, लोकतंत्र, चुनाव प्रक्रिया और नागरिक अधिकारों के बारे में जानकारी मिलती है। इससे वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों को बेहतर तरीके से समझते हैं। राजनीतिक शिक्षा युवाओं को यह सिखाती है कि वे सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय रखें और उनमें समाधान की प्रक्रिया का हिस्सा बनें। राजनीतिक शिक्षा युवाओं में नेतृत्व क्षमता का निर्माण करती है, जिससे वे जिम्मेदार और प्रभावशाली नेता बन सकते हैं। राजनीतिक शिक्षा युवाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए एक प्रभावशाली माध्यम हो सकती है। यह उन्हें न केवल जागरूक बनाती है, बल्कि उन्हें राजनीतिक प्रक्रियाओं में सक्रिय योगदान के लिए प्रेरित भी करती है। यदि इसे सही तरीके से बढ़ावा दिया जाए, तो राजनीति में युवाओं की प्रभावशाली भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती है, जो लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में सहायक होगी।
2. **युवाओं को नेतृत्व के अवसर देना** – स्थानीय निकायों और छात्र संगठनों में युवाओं को प्रतिनिधित्व दिया जाए। युवा नेता किसी भी समाज की ऊर्जा, नवीनता, और परिवर्तनशीलता के प्रतीक होते हैं। यदि उन्हें अवसर प्रदान किए जाएं, तो वे समाज को एक नई दिशा दे सकते हैं और राजनीति में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। अवसर देने का अर्थ केवल संसाधन उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि उन्हें नेतृत्व, निर्णय लेने और सामाजिक बदलाव के लिए उचित मंच प्रदान करना है। युवा नेताओं को अवसर देकर राजनीति में उनकी भागीदारी बढ़ाना न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र के दीर्घकालिक विकास के लिए भी आवश्यक है। युवा ऊर्जा, उत्साह और नवीन

दृष्टिकोण से राजनीति को अधिक प्रगतिशील, समावेशी और परिणामोन्मुख बनाया जा सकता है। इसके लिए सरकार, राजनीतिक दलों, और समाज को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि युवाओं को नेतृत्व का अवसर और मंच दोनों मिल सके।

3. **डिजिटल माध्यमों का उपयोग** – डिजिटल माध्यम आज के युग में सूचना के आदान–प्रदान और संवाद का सबसे प्रभावी साधन बन गए हैं। युवा पीढ़ी डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। यदि इन माध्यमों का सही तरीके से उपयोग किया जाए, तो राजनीति में युवाओं की भागीदारी को न केवल बढ़ाया जा सकता है, बल्कि इसे अधिक प्रभावशाली और समावेशी भी बनाया जा सकता है। डिजिटल माध्यमों के उपयोग से राजनीति में युवाओं की भागीदारी को प्रभावी ढंग से बढ़ाया जा सकता है। यह उन्हें जागरूक, शिक्षित, और संगठित करने का एक सशक्त साधन है। हालांकि, इसके लिए डिजिटल पहुंच, पारदर्शिता, और सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। यदि इन माध्यमों का उपयोग सही तरीके से किया जाए, तो यह युवाओं को राजनीति के केंद्र में लाने का एक क्रांतिकारी साधन बन सकता है।

4. **आर्थिक सहायता** – आर्थिक सहायता युवाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ाने के लिए एक प्रभावी साधन साबित हो सकती है। यह उन्हें वित्तीय बाधाओं से मुक्त कर उनके नेतृत्व को विकसित करने का अवसर देती है। हालांकि, इसके लिए पारदर्शी और उद्देश्यपूर्ण प्रणाली की आवश्यकता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सहायता वास्तव में सही हाथों तक पहुंचे और राजनीति में सकारात्मक बदलाव आए। राजनीति में युवाओं की भागीदारी के लिए वित्तीय संसाधनों की कमी एक महत्वपूर्ण बाधा है। चुनाव प्रचार, संगठन निर्माण और राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। ऐसे में यदि युवाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाए, तो उनकी राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा दिया जा सकता है।

निष्कर्ष :

भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी लोकतंत्र को सशक्त बनाने की कुंजी है। उनकी भागीदारी से देश में नई दृष्टि, पारदर्शिता और प्रगतिशीलता आ सकती है। हालांकि, इसके लिए संस्थागत सुधार और जागरूकता अभियान की आवश्यकता है। भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी एक सकारात्मक परिवर्तन की ओर संकेत करती है। उनकी ऊर्जा, नवीन दृष्टिकोण, और तकनीकी कौशल भारतीय लोकतंत्र को मजबूत कर सकते हैं। हालांकि चुनौतियां हैं, लेकिन यदि युवा जागरूकता और प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ें, तो वे भारतीय राजनीति में नए आयाम जोड़ सकते हैं। देश को प्रगतिशील और समावेशी बनाने के लिए युवाओं की भागीदारी अनिवार्य है। यदि युवा सक्रिय रूप से राजनीति में शामिल होते हैं, तो भारत एक अधिक समावेशी और जिम्मेदार लोकतंत्र का उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है।

References:

1. Acharya, R., Singh, A., & Santhya, K. G. (2010). Participation in civil society and political life among young people in Maharashtra: Findings from the Youth in India-Situation and Needs study. *Journal of Adolescence*. Retrieved from Academia
2. Ilavarasan, P. V. (2013). Community work and limited online activism among India youth. *International Communication Gazette*. Retrieved from SAGE
3. Jain, V., Pich, C., & Ganesh, B. E. (2017). Exploring the influences of political branding: A case from the youth in India. *Journal of Indian Business Research*. Retrieved from Emerald
4. Jeffrey, C., & Dyson, J. (2014). "I serve therefore I am": Youth and generative politics in India. *Comparative Studies in Society and History*. Retrieved from Cambridge
5. Jeffrey, C., & Young, S. (2012). Waiting for change: Youth, caste and politics in India. *Economy and Society*. Retrieved from Taylor & Francis
6. Kumar, A. (2020). Indian politics and youth participation. Retrieved from Anubooks
7. Majumdar, B. (2023). Youth leadership and participation in political processes. *Handbook of Youth Development: Policies and Practices*. Retrieved from Springer
8. Michelutti, L. (2007). The vernacularization of democracy: Political participation and popular politics in North India. *Journal of the Royal Anthropological Institute*. Retrieved from Wiley
9. Mishra, J., & Gupta, P. (2019). Political engagement and political attitudes of Indian youth. *Youth in India*. Retrieved from Taylor & Francis
10. Parakh, D. (2020). Representation of youth in electoral politics: An analysis of the Indian election system. *Journal of Politics & Governance*. Retrieved from Academia
11. Rodgers, D., & Young, S. (2017). From a politics of conviction to a politics of interest? The changing ontologics of youth politics in India and Nicaragua. *Antipode*. Retrieved from Wiley
12. Sampat, K., & Mishra, J. (2014). Interest in politics and political participation. *Indian Youth and Electoral Politics*. Retrieved from SAGE
13. Singh, S. (2022). Youth participation in Indian democracy: An overview. *Academic Discourse*. Retrieved from Indian Journals
14. Tripathi, S. N., & Ahmad, S. N. (2023). A study on digital democracy and political participation of the youth. Retrieved from ResearchGate
15. Verma, V., & Srivastava, A. (2024). Role of youth in Indian politics: A catalyst for change. *International Research Journal of Humanities*. Retrieved from IRJHIS

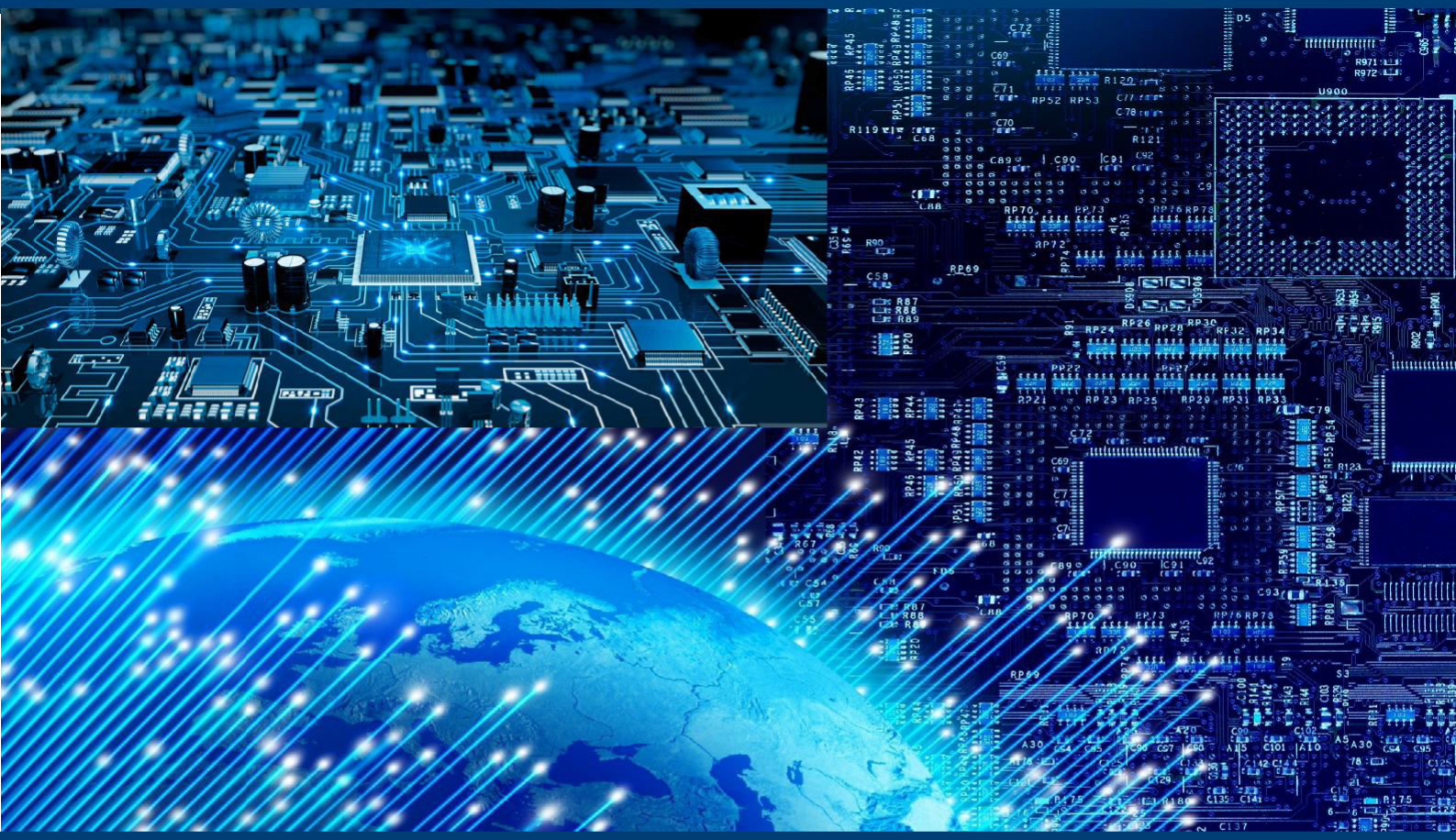

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |